Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 4, APRIL - 2022 Publication Date: 25/04/2022

DOIs:10.2018/SS/202204001 --:-- Research Article

"ग्रामीण छात्राओं का उच्च शिक्षा से विमुखता का समाजशास्त्रीय अध्ययन्" (सहारनपुर जनपद के संदर्भ में)

डॉ. रत्ना त्रिवेदी
एसोसिएट प्रोफेसर
विभागाध्यक्ष(समाजशास्त्र विभाग)
मुन्नालाल एंड जयनारायण खेमका
गर्ल्स डिग्री कालेज, सहारनपुर,उत्तर प्रदेश
Email - ratnadolly@gamil.com

अमित पंवार
शोध छात्र
समाजशास्त्र विभाग
मुन्नालाल एंड जयनारायण खेमका
गर्ल्स डिग्री कालेज, सहारनपुर,उत्तर प्रदेश
Email - amitpanwar1984@gmail.com

शोध सारः मानव विकास के लिये मूल आवश्यकता है। शिक्षा के साथ रोजगार के अवसर पर बढ़े हैं और आय के स्तर में भी वृद्धि हुई है। एक व्यक्ति का विकास और एक राष्ट्र की प्रगति पर निर्भर करती है।

महिला विकास का सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय विकास के साथ है। महिलाओं के विकास के लिए देश में बड़ी संख्या में योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। महिलाओं से सम्बद्ध मुद्दों की राजनीति और कार्यक्रमों को मुख्य धारा से जोड़ना और महिलाओं को पंचायतों से लेकर संसद तक निर्णय करने की प्रक्रिया में कम से कम एक तिहाई हिस्सेदारी प्रदान करना था। महिलाओं के विकास की नीति तीन पक्षीय होनी चाहिए। यानि स्वास्थ्य शिक्षा और रोजगार। शिक्षा प्राप्त करने में स्त्रियों का स्तर बढ़ा है, परन्तु बहुत ही धीमी गति से। परन्तु इसमें महिला उच्च शिक्षा प्राप्ति का प्रतिशत बहुत ही कम है।(19.6 प्रतिशत) और ग्रामीण महिला उच्च शिक्षा का प्रतिशत हो और भी कम है। वैसे तो भारत के सम्पूर्ण क्षेत्र उच्चशिक्षा से विमुखता विद्यमान है। लेकिन यह शोध कार्य यू.पी. के सहारनपुर जिले के विश्वविद्यालय से सबधिंत है।

मुख्य शब्दः- ग्रामीण छात्राओ, अच्च शिक्षा, विमुखता, अधिकार, रोजगार।

1. प्रस्तावनाः-

प्राचीन विश्व के परिदृश्य में अगर बात की जाए तो इस संसार में महिला को उच्च स्थान प्राप्त था तथा वह अपने घर एवं छोटे-छोटे कबीले की मुखिया हुआ करती थी जिसका महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी रचना वोल्गा से गंगा में स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

परन्तु स्थितियां सदा एक सी नहीं रही जनसंख्या में वृद्धि एवं मनुष्य के स्थायी निवास ने महिला मुखिया का स्थान पुरूष को प्रदान कर दिया और अब पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली सहभागिनी बन गयी । मनुस्मृति में नारी के अर्द्धनारीश्वर रूप कल्पना की गयी है।

कालान्तर में स्त्रियों की स्थिति में समय के साथ-साथ गिरावट आती चली गयी अब स्त्रियों को पुरूषों के अधीन रहना पड़ गया है जिससे बहुपत्नि एवं बहुपति दोनों पर पुरूष समाज का नियन्त्रण हो गया। लेकिन फिर भी प्राचीन काल की स्त्रियों में लोपामुद्रा एवं गार्गी जैसी विदुषी महिलाओं का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है, जिन्होंने अपने ज्ञान से न केवल पुरूष समाज को बल्कि तत्कालीन व्यवस्था को भी प्रभावित किया।

प्राचीन काल मध्यकाल एवं आधुनिक काल में स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों में लगातार परिवर्तन आते गये हैं, मध्यकाल में जब स्त्रियों को अनेक सामाजिक बुराईयों जैसे जौहर व सती से कड़े नियमों में बांधकर रख दिया वहीं भारत में मुस्लिम आगमन से स्त्रियों को न केवल घर की चाहरदीवारी में कैद कर दिया बल्कि उनको परदे से भी ढक दिया गया। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में साथ साथ आर्थिक स्थिति भी निम्न स्तर की थी। भारत गाँवों का देश है।

सामाजिक पिछड़ेपन से स्त्रियों की स्थिति में एवं शिक्षा में भारी गिरावट आ गयी। केवल कुछ सम्भ्रान्त घरानों की स्त्रियों के कुछ उदाहरण पढ़े-लिखे होने के मिलते हैं वह भी घर पर शिक्षा की व्यवस्था करने के उपरान्त। अंग्रेजी शासनकाल में कुछ महिलाओं को विद्यालय खुलने के उपरान्त जरूर पढ़ने लिखने का अवसर प्राप्त हुआ जिनमें मुख्य भूमिका भारत में चलने वाले सामाजिक आन्दोलनों के प्रणेताओं जैसे राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, गोपाल कृष्ण गोखले डी.वी.कार्वे आदि की रही । जिन्होने न केवल सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध ओदोलन चलाए बल्कि नारी शिक्षा एवं नारी के मान -सम्मान को बढाने का प्रयास भारत देश 1947 में आजाद हुआ तथा 1950 में भारत को संविधान प्राप्त हुआ और भारतीय संविधान में कानूनी रूप से सभी को समानता के अधिकार में दिया गया है। भारत में निवास करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अब स्वतंत्र रूप से शिक्षा ग्रहण कर व्यवसाय का चुनाव कर सकता है।

2. अध्ययन के उद्देश्यः-

- ग्रामीण छात्राओं के शिक्षित होने पर उनके जीवन की गुणवक्ता के विषय में उध्ययन करना।
- ग्रामीण छात्राओं हेतु वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण छात्राओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के बहुआयामी पहलुओं का अध्ययन एवं उनका विश्लेषण करना।
- सामाजिक एवं आर्थिक विकास के विभिन्न पहलुओं एवं शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारणों का विश्लेषण करना।

3. उपकल्पनाः-

- ग्रामीण छात्राओ को उनके शिक्षा के अधिकारो की जानकारी नही होती।
- अज्ञानता व गरीब एवं सामाजिक पिछड़ापन ग्रामीण छात्राओ का विमुखता का प्रमुख कारण है।
- ग्रामीण छात्राओ की सामाजिक आर्थिक स्थिति सामान्यतः सही नही होती है ।

4. शोध विधि एवं प्रविधिः-

शोध नियमो के अनुसार प्रस्तुत शोध में नवीन व्यावहारिक पद्धतियों विश्लेषण, सैद्धातिंक तुलनात्मक पद्वतियों को अपनाते हुऐ शोध लेख को मौलिकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य हेतु अवाश्यक साम्रगी प्राचीन संदर्भ ग्रन्थों से एकत्र पुस्तकालयो, इण्टरनेट, शोध संस्थानो आदि में उपलब्ध साधनो से एकत्र किया जाना अनुमान्य है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रदत्त संकलन करने के लिए अवलोकन, व्यक्तिगत अनुभव किया गया है। इन संदर्भ आधारित पुस्तको के अलावा, व्यक्तिगत अनुभव विभिन्न आयोगो के प्रकाशनो और ग्रामीण पृष्ठ भूमि पर जाकर एकत्र की गयी साम्रगी का विश्लेषण अध्ययन है।

5. ग्रामीण छात्रायें एवं उच्च शिक्षाः-

यह सार्वभौम स्वीकार्य तथ्य है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा और विकास के बीच धन्ष्ठि सम्बन्ध है। महिलाओं को शिक्षा और अधिकार दिये कोई समाज खुशहाल नहीं हो सकता। व्यक्ति, परिवार, समुदाय और राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास में महिलाओं की शिक्षा एवं साक्षरता का महत्व सभी जगह स्वीकार किया गया है पिछले एक दशक में एक बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि महिलाओं के लिए समानता हासिल करने के वास्ते जारी संघर्ष के केन्द्र में महिलाओं की शिक्षा को मान्यता प्रदान की गयी। सन् 2000 तक सबको साक्षर बनाने अर्थात सार्वभौमिक साक्षरता का लक्ष्य हासिल करने का नारा दिया गया है। शिक्षा से कोई भी महिला अधिक जागरूक, आर्थिक श्रेष्ठ और अधिक आत्म विश्वासी बन सकती है, इससे परिवार और समुदाय में उसका महत्व बढ़ जाता है।

1981 से 1991 के दशक में पुरूष साक्षरता की बाजाए महिला साक्षरता की दर अधिक तेजी से बढ़ी है। 60 प्रतिशत से अधिक महिलाएं अभी निरक्षर है। सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि महिला साक्षरता में ग्रामीण -शहरी का अन्तराल बढ़ा है। अगर साक्षरता के आंकडों पर नजर डालें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 80 प्रतिशत महिलाएं निरक्षर है। और केवल 2 प्रतिशत ऐसी हैं जो मैट्रिक से अधिक पढ़ी हैं। ग्रामीण लड़कियां देर से स्कूली शिक्षा प्रारम्भ करती हैं और बीच में ही छोड़ देती हैं। यह बडी महत्वपूर्ण बात है कि भारत के सर्वाधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और बिहार सर्वाधिक पिछड़े राज्यों के वर्ग में आते हैं। केरल इस मामले में आपने आप में एक जीता जागता उदाहरण है, जहां महिलाओं की साक्षरता दर (87 प्रतिशत) अधिक है। जिसमें ग्रामीण महिला शिक्षा का भी एक अच्छा प्रतिशत है।

परिवार के सदस्यों का सामाजिक स्तर उन्नत करने में स्त्री शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है, अनुसंधान अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाएँ चाहे वह शहरी हो अथवा ग्रामीण उनकी शिक्षा का समूचे परिवार के सामाजिक स्तर के सुधार पर रचनात्मक असर पड़ता है।

आज महिलाएं शहरी ग्रामीण शिक्षा प्राप्ति के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, शहरी महिलाओं में शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट रूप से उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर परिलक्षित है, उनकी आर्थिक सामाजिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। ग्रामीण महिलाओं के विषय में यूं तो कई सर्वे रिसर्च किये गये हैं, परन्तु शिक्षा से ग्रामीण छात्राओं के सामाजिक आर्थिक जीवन के विभिन्न आयोमों पर किस प्रकार प्रभाव डाला है।

6. समस्या सम्बंधी अध्ययनः-

छात्राओं की शिक्षा में भागीदारी लेकर उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षा को बीच में छोड़ना एक अध्ययन का विषय है, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा हथियार है। इसके माध्यम से ही छात्राओं का आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण सम्भव है, छात्राओं आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। परिवार एवं सामाज की प्रगति का एक बहुत बड़ा आधार महिलाएं ही है। छात्राओं के शिक्षित होने पर ही एक प्रगतिशील समाज का , देश का निर्माण संभव है। ग्रामीण छात्राओं में विशेषकर युवतियों में शिक्षा प्राप्त करने की लगन सपष्टतः दिखायी देती है, परंतु फिर भी समय-समय पर देखने को मिलता है कि इन्हें पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ रही है। क्योंकि समाज के नियमों का दबाव निरन्तर इन पर बना रहता है, तथा उच्च शिक्षा हासिल कर लेने के बाद भी या करते हुए उन पर समाज के नियमों का परम्परागत रूप से पालन करना अनिवार्य समझा जाता है। ग्रामीण छात्राओं में शिक्षा प्राप्ति का प्रतिशत बढ़ा है, परन्तु उच्च शिक्षा को बीच में ही छोड़ना यह ए विस्तृत अध्ययन का विषय है।

7. विशलेषणः-

प्रत्येक समस्या का स्वरूप व क्षेत्र अति विशाल होता है। विशाल क्षेत्र में किसी समस्या का वृहद्ध विश्लेषण कर पाना अत्यंत कठिन होता है। इसलिए प्रत्येक शोध की सीमा निर्धारित करना आवश्यक होता है। उपरोक्त शोध को निम्नलिखित सीमाओं तक सीमित रखा गया है। प्रस्तुत शोध ग्रामीण शिक्षित छात्राओं के अध्ययन को बीच में छोड़ना का अध्ययन तक सीमित रखा जायेगा। प्रस्तुत शोध केवल सहारनपुर जनपद की ग्रामीण शिक्षित छात्राओं तक सीमित किया जायेगा।

भारत में 50 प्रतिशत महिलाएं अब भी ऐसी हैं, जो लिख पढ़ नहीं सकती। अशिक्षित महिलाओं का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है। किसी भी देश के स्वागीण विकास हेतु वहाँ की स्त्री शिक्षा का सर्वाधिक महत्व हाता है। भारत में शिक्षा के संदर्भ में शिक्षित होने के अर्थ लैगिंग समानता से है। शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी स्त्री-पुरूष का अन्तर दिखाई देता है। आज भी विशेषतः ग्रामीण परिवेश में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है।

9. सुझावः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रतिगमन विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। यह अध्ययन पिछले चार दशकों में महिलाओं की उच्च शिक्षा में बढ़ती भागीदारी और उसके कारण उनमें आए सामाजिक परिवर्तनों के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषण करता है। भारत गांवो का देश रहा है। भारतीय स्त्रियों को देवी का रूप् माना जाता रहा है। फिर भी उनकी स्थिति सभी प्रकार से दयनीय है, उनके जन्म के साथ ही उनकी समस्याएँ प्रारंभ हो जाती है। परम्पराएँ एवं रूढ़िवादी सोच सदैव ही महिलाओं की उन्नति के विपरीत

रही है कई गैर सरकारी संगठनों एवं सरकारी संगठनों व स्वयं सरकार ने उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए प्रयास किये हैं, परन्तु वह प्रयास अल्प हैं। अशिक्षा महिलाओं के विकास की राह में सबसे बड़ी बाधा है। हमारे देश में विश्व की लगभग एक तिहाई अशिक्षित आबादी निवास करती है।

8. निष्कर्षः-

उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन देखने को मिले। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रायरत महिलांए विवाह को कम प्राथमिकता देती है व विवाह देरी से करती हैं, वे परिवार को सीमित रखती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनकी सामाजिक सांस्कृतिक सोच अधिक विस्तृत हो जाती है। उनकी सामाजिकता का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जाता हे।

विभिन्न विश्लेषणों के आधार पर यह कहने में कोई भी संशय नहीं है कि भारत में महिला सशक्तिकरण की नितान्त आवश्यकता है। यह सपष्ट है कि केवल साक्षर होना ही समस्या का हल नहीं है परन्तु स्त्रियों को अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों हेतु सजग होने के लिए उच्च शिक्षित होना अति आवश्यक है ताकि वो अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपने अधिकारों का प्रयोग कर सके। यह भी कटु सत्य है कि सरकार स्त्रियों के विषय में बहुत से कानून प्रस्तावित , पारित करती है। परन्तु उनका सही रूप् से क्रियान्वयन नहीं हो पाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. चतुर्वेदी पं. ज्वाला प्रसाद(2013), 'मनु स्मृति' रणधीर प्रकाशन हरिद्वार।
2. सांकृत्यायन राहुल(1943), 'वोल्गा सं गंगा'-किताब महल, दिल्ली।
3. डा0 अम्बेडकर, बी.आर.(1936), एनहिलेशन आॅफ कास्ट, नई दिल्ली।
4. आहूजा राम(2011), सामाजिक समस्याएं, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. आहूजा राम(2005), भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. डॉ. सिंह धर्मवीर(2014), राजनीतिक समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7. सिंह जे.पी.(2011), समाजशास्त्र- अवधारणाएं एवं सिद्धान्त, पी.एच.एल. लर्निंग प्रा.लि., नई दिल्ली।
8. सरकार एस0(2016), भारतीय संविधान, आलिया लॉ एजेंसी, इलाहाबाद।
9. आहूजा राम(2004), सामाजिक अनुसन्धान, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. वर्मा सवालिया बिहारी(2011), ग्रामीण महिलाओं की स्थिति, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।